मूल्य रु. ५-००

श्री स्वामिनारायण

मासिक

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महिने की ११ तारीख • सलंग अंक १७४ जनवरी-२०२२

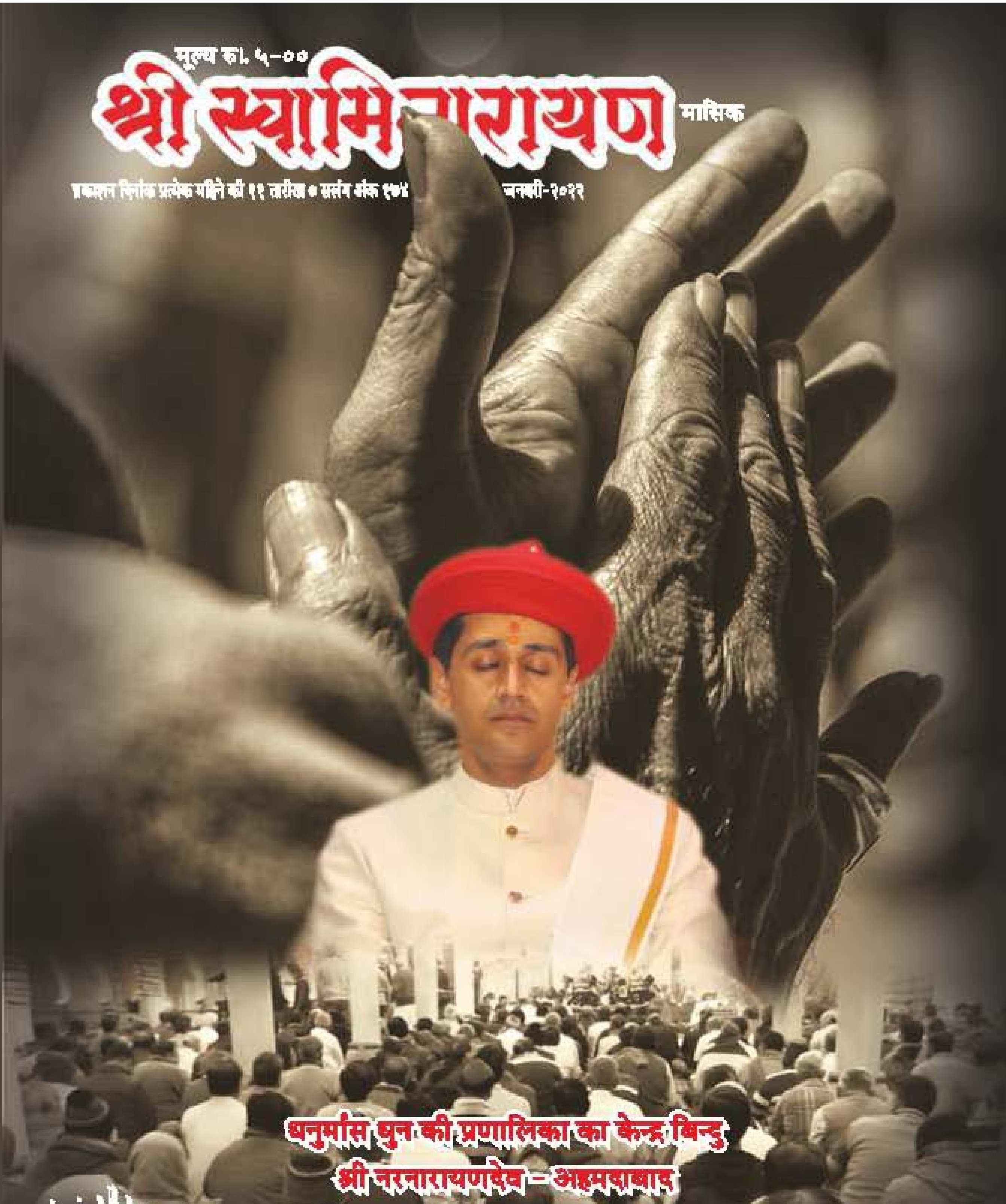

धनुर्मास धुन की प्रणालिका का केन्द्र बिन्दु
श्री नरनारायणदेव - अहमदाबाद

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

पर्व विजय स्तंभ स्थापना विधि ।

पर्व ग्राउन्ड पर स्वहस्ते वृक्षारोपण करते प.पू. गादीवालाश्री

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - १५ ● अंक : १७४ ● जनवरी-२०२२

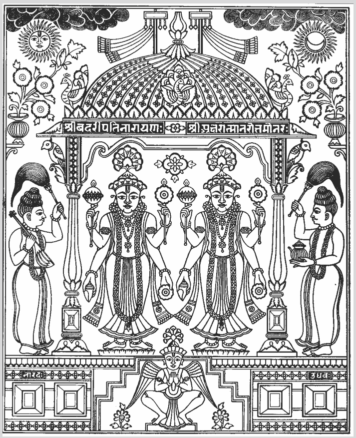

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स :
२७४१९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी
(महंत स्वामी)
मो. ९३१३७१९२३२

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
मो. ९३१३७०६०९५
magazine@swaminarayan.in
www.swaminarayan.info

पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

अ नु क्र म णि का

०१. अस्मदीयम् ०४

०२. प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा ०५

०३. विश्व का सर्व प्रथम श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर अहमदाबाद की प्रमुख विशेषताये ०६

०४. पर्व के साथ साथ ०९

०५. श्रीहरि के ७ वें ८ वे वंशज के मुख से अमृतवचन १०

०६. चौदहवाँ रत्न १२

०७. जमीयतपुरा १३

०८. श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से १४

०९. भक्ति सुधा १५

१०. सत्संग समाचार १७

अस्मदीयम्

उत्तरायण का सूर्य प्रवेश वर्षो से मनाया जाना हमारी परम्परा रही है। इस प्रकार विषम दिनो में समय की कमी होने के कारण अपने प्रसादी के दिव्य पवित्र सभा मंडप में प्रातः ब्रह्ममुर्हुत में संत-हरिभक्त अधिक संख्या में धनुर्मास में धुन में भाग ले के लोग हरि की कृपा प्राप्त करते है। देश-विदेश के हरिभक्त अपने तरफ से धुन का पंजीकरण कराके इस वर्ष में भी सर्वाधिक लाभ लिये । अपने आराध्यदेव सर्वावतारी भगवान श्री स्वामिनारायण और परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के दिव्य चरणो में हम सब मिलकर प्रार्थना करे कि हे प्रभु अपने पर्व महामहोत्सव को निर्विध्न पूर्ण कराये। आप की करुणा की दृष्टि हम सब के उपर बनी रहे।

पर्व महोत्सव के निमित्त पूरे विश्व में श्री शिक्षापत्री का सर्वजीव हित के लिये संदेश का प्रचार-प्रसार हो । और जगत के जीज्ञासु मुमुक्षुओ को सत्य समझ आये । तथा सर्वोपरी परमात्मा स्वरुप की उपासना करके आत्यंतिक महा मोक्षरुपी अविनाशी ऐसे अक्षरधाम की प्राप्ति करने का सरल मार्ग वेदो-उपनिषदो और शास्त्रो में दिया गया है। ऐसे अर्चिर मार्ग उत्तर विभाग जिसका आश्रिय परम भागवत भक्त भीष्म पितामह लेकर एक महीने तक अपने शरीर को बाणो की शैय्या पर रखकर पुनः भगवतस्वरुप में जोडकर मोक्ष की प्राप्ति किये थे । उसी प्रकार अनंत जीवो को आत्यंतिक मोक्ष प्राप्त करने के लिये । यह पर्व महोत्सव का समारंभ सार्थक हो । अंत समय में इसका स्मरण आये । जिससे अन्ते या मति सा गति के वैदिक नियमानुसार अपने दिव्य अक्षरधाम की प्राप्ति हो। ऐसी प्रार्थना करे ।

संपादकश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कार्यक्रम की

रुपरेखा

(दिसम्बर-२०२१)

१२ श्री नरनारायणदेव द्विशताब्दी पाटोत्सव ''पर्व'' महामहोत्सव के उपलक्ष्य में आयोजित विजय स्तम्भ विधि स्वयं के कर कमलो द्वारा विधिवत रुप से पूर्ण किये । श्री नरनारायणनगर जमीयतपुरा हाईवे ।

प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(डिसम्बर-२०२२)

८ श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर (से-२३) पाटोत्सव शाकोत्सव में पधारना ।

१२ श्री नरनारायणदेव द्विशताब्दी पाटोत्सव ''पर्व'' महामहोत्सव के उपलक्ष्य में आयोजित विजय स्तम्भ विधि स्वयं के कर कमलो द्वारा पूर्ण किये ।

१९ श्री स्वामिनारायण मंदिर वाली (राज.) में शाकोत्सव उत्सव में पधारना ।

१७ श्री स्वामिनारायण मंदिर ईश्वरपुरा (बदपुरा) ''पर्व'' महामहोत्सव के उपलक्ष्य में आयोजित २०० घंटे की महामंत्र धुन के अवसर पर पधारना ।

२१ श्री स्वामिनारायण मंदिर डांगरवा ''पर्व'' महामहोत्सव के उपलक्ष्य में आयोजित महामंत्र धुन के अवसर पर पधारना ।

विश्व का सर्व प्रथम श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर अहमदाबाद की प्रमुख विशेषताये

- साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुरधाम)

(१)ई.स. १८१८ में ब्रिटिश शासक ईस्ट इंडिया कम्पनी को शासन अहमदाबाद शहर में था। उस समय के कलेक्टर श्री सर एन्डोप भगवान श्री स्वामिनारायण के मानव जीवन के कल्याण हेतु कार्यो जैसे समाज सेवा, धर्मा जागृति, अंधश्रध्धा, कुरिवाजो, व्यसन मुक्ति इत्यादि कार्यो से अधिक प्रभावित हुए थे।

(२)ई.स. १८१८ के वर्ष में अहमदाबाद के भद्र किले के अंदर मुख्य कार्यालय में आंमत्रित करके १११ तीर्थो की सलामी के साथ समाज सुधार के उद्देश्य के लिये अहमदाबाद शहर में मंदिर और आश्रम बनाने के लिये प्रचुर मात्रा में कालुपुर क्षेत्र में एक सौ एकड भूमि का दान दिये । उस जमीन का दस्तावेज विलायत की रानी विक्टोरिया से हस्ताक्षर कराके ''यावच्चंद्र दिवाकरौ'' तक का लेख प्रदान किये थे।

(३) साबरमती नदी के किनारे विशाल भूमि सर्व प्रथम साधुओ के रहने के लिये धर्मशाला बनाये । संत वहाँ पर रहकर वैदिक सनातन धर्म का प्रचार करने लगे।

(४) ई.स. १८१८ से ई.स. १८२२ के संक्षिप्त काल में भगवान श्री स्वामिनारायण तथा उनके शिष्य पूर्वाश्रम में राजस्थान के भरतपुर स्टेट के राजा नवलसिंह थे । स्वामिनारायण में साधु बन गये । जो शिल्प कला, वास्तुशास्त्र के पंडित थे। स्वामी के नेतृत्व में सेवा भावी भक्त तन, मन, धन के सहयोग से पथ्थरो को तराश कर भव्य मंदिर का निर्माण किया गया। उस मंदिर में सेवा देने के लिये अपने गाँव से गाडी में पत्थर लाकर देते थे । चूना पीसते थे । तथा शिल्पियो की सहायता में जुडे जाते थे। केवल श्रमदान से मंदिर का निर्माण हुआ था। यह दृश्य देखने के लिये कलेक्टर श्री एन्टोप बारबार आते थे। जो कार्य सत्ता-सम्पत्ति से न हो सके वह कार्य भगवान श्री स्वामिनारायण संत-भक्त करते थे।

(५) भारत में लाखो मंदिरो में भगवान के अवतार देवी देवताओ के स्वरुप उस सम्प्रदाय के पर्वतकारो द्वारा अपने मत सिद्धान्त के अनुसार स्थापित किये है। भगवान श्री स्वामिनारायण ने अपने सम्प्रदाय को शुद्ध रामानुजीय विशिष्ट द्वैत सिद्धान्त के मत

भागवत धर्म के आधार पर परम ब्रहम परमात्मा आदि सतयुग में धर्म-मूर्ति के द्वारा जिस धर्मारण्यक्षेत्र - जो साबरमती नदी के तट (नारायणघाट) में युगल स्वरुप अवतार को धारण किये । यह बात लाखो वर्ष की है । श्री नरनारायण भगवान आज भी साक्षात् रुप में बद्रीकाश्रम में भरतखंड के कल्याण हेतु बोरडी के वृक्ष के नीच बैठकर कठिन तपस्याकर रहे है । उस नरनारायण भगवान की आज तक कोई सम्प्रदाय धर्म परम्परा वाले अपने मंदिर में स्थापना नही किये थे । श्रीमद् भागवत - स्कंद पुराण - पदमपुराण - वराह पुराण आदि व्यास द्वारा रचित पुराणो के आधार पर भरतखंड के मुमुक्षुओ नरनारायण की पूजा अवश्य किये । वे वचन कहे थे । फिर भी भरतखंड की धार्मिक पूजा भगवान श्री नरनारायण के दर्शन-पूजन से वांचित रह जाती थी । ऐसे असंख्य कारणो को लक्ष्य में रखकर भरतखंड की सभी धार्मिक प्रजा के कल्याण हेतु श्री स्वामिनारायण सम्प्रदाय के सभी प्रथम मंदिर में श्री नरनारायण भगवान की युगल श्याम मूर्तियो डुंगरपुर (राजस्थान) में तैयार कराके । तथा नरनारायण अवतार के जन्मदाता जिन्होने साबरगंगा के किनारे धर्मारण्य क्षेत्र में रहकर बारह हजार वर्ष तक तप किये । वे पवित्र दम्पात्ति धर्मदेव - मूर्ति देवी की प्रतिमा बनाये । तथा भगवान श्री मुरली मनोहर राधाकृष्ण की प्रतिमा तैयार कराके अपने हाथो से स्थापना किये थे ।

(६) सम्प्रदाय का सर्व प्रथम मंदिर सनातन हिन्दु धर्म वैष्णव परम्परा वाले धर्म पिता-भक्तिमाता सहित श्री नरनारायण भगवान का सर्व प्रथम मंदिर की स्थापना भगवान के कर कमलो द्वारा वि.स. १८७८ फाल्गुन सुद-३ अर्थात् ई.स. १८२२ तारीख २४ फरवरी के शुभ मंगल दिवस पर तत्कालीन अंग्रेज कलेक्टर सर जास्कीन की उपस्थिति में पूरे राजशाही सन्मान के साथ चार वैद के १०८ भूदेव के पुरोहित पद से अहमदाबाद शहर के साधु-संत-नगरपति पदाधिकारी - शास्त्री - पुराणी तथा संतो की पावन उपस्थिति में दोपहर के अभिजीत नक्षत्र में श्री नरनारायण भगवान धर्मपिता - भक्तिमाता की तथा श्री राधाकृष्ण भगवान की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा वैदिक मंत्रो द्वारा किया गया । उस समय नगरवासियो के खुशी की सीमा नही थी । उसी अवसर पर २६ फरवरी के दिन कांकरिया सरोवर के किनारे भूदेवो सहित नगरजन परिक्रमा करके मंत्र मुग्ध हुए ।

(७) ई.स. १८२२ में मंदिर के साथ ही साथ विश्व में सबसे बड़ा काष्ट कला कृति वाला हवेली मंदिर भगवान स्वामिनारायण के कर कमलो द्वारा किया गया था । मुख्य मंदिर के साथ ही साथ हवेली के स्तम्भ-झरोखे तथा कमानो-पूतलियो तथा भारत के आजादी के इतिहास को निरुपति किया गया है । स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर के हवेली मंदिर में दिखाई देता है । भारत देश में काष्ट-पत्थर संगमरमर के ईट के मंदिर है । लेकिन विश्व की सबसे बड़ी काष्ट हवेली - कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर ही है ।

विश्व के सर्व प्रथम श्री स्वामिनारयण मंदिर को फाल्गुन सुद तीज ता. ५-३-२०२२ के पवित्र दिन की यशोगाथा का २०० वर्ष पूर्ण होने पर ''पर्व''महामहोत्सव के नाम से द्विशताब्दी जयंती मनाई जा रही है । जो पूरे वर्ष ''पर्व'' के रुप में करोडो अनुयायी भक्त अपने श्रद्धा भक्ति के अनुसार सामाजिक धार्मिक कार्यक्रम व्यक्तिगत रुप से घर मंडल - मंदिर - संगठन विदेश के श्रद्धालु वर्ष भर कार्यक्रम मनाया जायेगा । वर्ष पर्यन्त हुए अनुष्ठान सत्कर्म पवित्र विचार जन सेवा के कार्यो के संस्मरणो के आदान प्रदान करने के लिये ता. २७-२-२०२२ से ५-३-२०२२ तक अडालज क्षेत्र में आदि आचार्य श्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री द्वारा संस्थापित श्री प्रभा हनुमानजी के सानिध्य में विशाल १२५ वीघा के प्रागंण में संत-सत्संगी मिलकर ''पर्व'' महोत्सव मनायेगे ।

इस सप्ताह के समय वर्ष से शुरु किये गये । जप-तप-भजन-पूजन-पाठ-पूरश्चरण, कीर्तन-होम-हवन-स्त्रोत पाठ के उपासको का सम्मान किया जायेगा ।

मनुष्य-मनुष्य के मध्य आपस में स्नेह-प्रेम आदर का भाव बढे । ऐसी प्रेरणा प्राप्त करने का अवसर मिले । इस महोत्सव की वर्तमान समय की अति आवश्यक बातो तथा उपदेश से लोगो को आडियो विडियो के माध्यम से सजन करने का प्रयास किया जायेगा । आपस में परिवार की भावना-सदाचार-व्यसनमुक्ति जैसे कार्यो संयुक्त को बताना । सोसीयल मीडिया की हानियो को समझाना, ड्रग्स के निषेध के विषय में समझाना खतरनाक कारको से अवगत कराना । इस अवसर बिना किसी भेद भाव के अमीर गरीब एक साथ भजन और भोजन करेगे ।

१२५ वीधा में बना नरनारायण नगर के परिसर में प्रतिदिन दो लाख लोग लाभ लेगे । इस में प्रवेश हेतु तथा भोजन हेतु कोई शुल्क नही लिया जायेगा । तथा जाति-धर्म भी नही पूछा जायेगा ।

भगवान श्री स्वामिनारायण आज से दो सौ वर्ष पूर्व भरतखंड के राजा भगवान श्री नरनारायणदेव की स्थापना किये । २०० वर्ष अर्थात् ७३००० दिन, २४०० महीन हो गया । जिस भगवान की सेवा पूजा, थाल, रसोई आरती, वंदना सफाई, वस्त्र, वाधा, उत्सव में रक्षा सुरक्षा मंदिर और काष्ठ की हवेली का मंदिर यथास्थिति बनाये रखना कई प्रकार की सेवा देने वाले आचार्यो, संतो-हरिभक्तो-धर्मप्रेमी जनता तथा मंदिर के लिये वालीदान देने वाले पक्ष रखने वाले वफादार परम्परा को बनाये रखने वाले प्रत्येक मुक्त समान भक्तो का गुणगान गाया जायेगा ।

विश्व की सबसे विशाल काष्ठ की हवेली - मंदिर की कलाकृति-नक्शे डिजाईन इतिहास अपने भारतीय संस्कृति की धरोहर विरासत के छजाने को अपने भवि्य के वंशजो के लाभ हेतु महोत्सव के परिसर में आधुनिक टेक्नोलाजी द्वारा दृश्यो को दिखाया जायेगा । तथा भारत देश की एक मात्र हेरिटेज सिटी अहमदाबाद में श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर से 'हेरिटेज वाक' शुरु होने के कारण प्रतिदिन असंख्य पर्यटक इस मंदिर का लाभ ले रहे है । तथा जुडने का लाभ उठा रहे है । तथा इससे पर्यटक अहमदाबाद में अधिक आयेगे ।

ई.स. १८२२ में भगवान श्री स्वामिनारायण ने कालुपुर में श्री नरनारायणदेव की स्थापना किये थे। इसके बाद ई.स. १८२६ में मंदिर की पूरी जिम्मेदारी अपने अनुयायी पुत्र प.पू.ध.धु. १००८ आदि आचार्यश्री अयोध्याप्रसादजी महाराज को दिये थे । उन्होने संस्कृत पाठशाला, गौशाला, धर्मशाला, यज्ञशाला, भोजन शाला प्रारम्भ किये थे । ४२ वर्ष तक गद्दी पर आचार्य पद पर आसीन रहे थे । इसके बाद इनके अनुगामी पुत्र प.पू.ध.धु. १००८ श्री केशवप्रसादजी महाराज २२ वर्ष तक आसीनर हे । उनके अनुगामी पुत्र प.पू.ध.धु. १००८ पुरुषोत्तमप्रसादजी महाराज १२ वर्ष तक आचार्य बने रहे । उनके अनुगामी पुत्र प.पू.ध.धु. १००८ श्री वासुदेवप्रसादजी महाराजश्री ३५ वर्ष तक रहे । उनके अनुगामी पुत्र प.पू.ध.धु. १००८ श्री देवेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री ३२ वर्ष तक रहे । उनके अनुगामी पुत्र प.पू.ध.धु. १००८ श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री ३५ वर्ष तक रहे । उनके अनुगामी पुत्र वर्तमान समय में प.पू.ध.धु. १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के पद पर बिराजमान है । उनके अनुगामी पुत्र प.पू. १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री लालजी पद पर रहकर ''पर्व'' महोत्सव के अध्यक्ष पद पर रहकर पूर्ण आयोजन का नेतृत्व सम्भाल रहे है ।

श्री स्वामिनारायण सम्प्रदाय में विश्व की अजोड परम्परा है । जिस में महिला अनुयायी वर्ग के लिये गुरु पद आचार्यश्री की पत्नी होती है । जो स्त्रीयो को गुरु स्थान पर रहकर दीक्षा गुरुमंत्र उपदेश द्वारा धर्म की रक्षा का पोषण करती है । आज के समय में नारी स्वतन्त्रता की माँग सामने आती है । यह आज से दो सौ वर्ष पहले भगवान श्री स्वामिनारायण ने स्त्रीयो को धर्म स्वतन्त्रता पुरुष के समान दिये थे । वर्तमान समय में ऐसी अद्वितीय व्यवस्था श्री स्वामिनारायण मूल सम्प्रदाय में स्थित है ।

पर्व के साथ साथ

- अतुल पोथीवाला (अहमदाबाद)

''पर्व'' महोत्सव अब अहमदाबाद अपने सामने आकर खडा है । और कालुपुर मंदिर के बड़े दरवाजा के कडे पर दस्तक दे रहा है।

श्री स्वामिनारायण मूलभूत सम्प्रदाय और विश्वभर के सर्वप्रथम ऐसे श्री नरनारायण भगवान ने आज से २०० वर्ष पहले अहमदाबाद के म्ध्य श्रीहरि ने स्वयं स्थापित किये थे । और गर्भगृह के चबूतरे पर खडे होकर अपना सम्पूर्ण दैवत, जेत और सामर्थ्थ इस युगल मूर्ति में प्रस्थापित किये । तथा इस प्रकार अमृत वचन कहे थे।

श्री नरनारायणदेव और हमारी मूर्ति इन दोनो में मात्र भी अंतर नही है । यह हम स्वंय ही है । हिमालय के निवासी इस शहर में आकर निवास किये है । वे आपार सुख है राशि है। नैष्ठिक व्रत उन्हे अति प्रिय है। उनको भाव से रखकर भोजन, वस्त्राभूषण, वृक्ष, गाँव, भैंस, बैल, फल, पुष्प इत्यादि हार जो समर्पित करेगा। उनको अपार फल मिलेगा। उन्हे किसी पदार्थ की आवश्यकता नही है। सभी को सब कुछ देने वाले वही है । ब्रह्मांड में जितने पदार्थ है। सभी नरनारायणदेव ने दिया है । उनके अपार नाम है । वे स्वयं एक है । फिर भी अनंत रुप वाले है । इतना कहकर अपना दोनो हाथ प्रत्येक मूर्ति के उपर धुमाकर बोले कि अब भरतखंड के लोगो के लिये नरनारयण का दर्शन सुगम हुआ है।

पर्व पवित्र और पावनकारी है । क्योकि उद्देशय अति समर्थवान है । पर्व एक ऐसा कारण है । इसकी प्राप्ति विशाल वरगद जैसा है। पर्व देखने वाले को तथा तन, मन, धन से सेवा देन वाले को सभी को आनन्ददायी है। एक बैल जो संतो की सेवा के लिये । गाडी से सामान लाता था । उसे श्रीहरि अक्षरधाम की प्राप्ति करा सकता हो र्तो हम लोग तो श्रीहरि के है। उनके ही महोत्सव में तन, मन, धन जैसे भी हो सके सेवा में जुडकर फल प्राप्त करे । स्वयं श्रीहरि अपने द्वारा स्थापित मूर्ति प्रतिष्ठान के अवसर कहे थे । वर्षो-वर्ष उत्सव मनाया गया । यह अपना पर्वोत्सव रही है । भरतखंड और सम्पूर्ण ब्रह्मांड के राजाधिराज ऐसे श्री नरनारायण भगवान के २०० वे प्रागट्य दिन का यह महोत्सव है। इस में किसी प्रकार का धन अपव्यय तथा प्रदर्शन की बात नही है।

कभी लाखो रुपया की सामग्री के साथ उत्सव करे । या मात्र तुलसी दल के साथ करें । नारायण भगवान की कृपा से सुखी है । इस लिये सुख से हरिभजन कर रहे है।

आइये हम सब पर्व रुप में मना रहे है । २०० वे वर्ष प्राट्य महामहोत्सव में जुडकर श्री नरनारायण भगवान की मन मोहक मूर्तियो की दैदिप्यमान इतिहास को सुनते हुए भरतखंड के राजाधिराज को भव्य स्वरुप में मन में रखकर पर्व को शानदार बनाये।

(१) हम सब तो श्री नरनारयणदेव तथा निश्चय वाले है। इस कारण से उत्तम है। इसमें किसी भी प्रकार की शंका नही है।

(२) ''इस लिये विश्वास रखकर प्रेम पूर्वक भगवान पुरुषोत्तम नारायण की बात सुने । इसमें मन स्थिर होने से निर्विकार हो जाता है। इससे बड़ा कोई और साधन नही है।

पर्व को मनाकर हम सब श्री पुरुषोत्तम नारायणकीबात कर रहे है।

श्री नरनारायणदेव की ध्वजा के यजमान

रु. ११,०००/- अ.नि.प.भ. बालजीभाई कल्याणभाई वेकरिया - वर्तमान रामभाई, सुत-अवनीश

श्रीहरि के ७ वें ८ वे वंशज के मुख से अमृतवचन

लेखक : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापूनगर)

पर्व विजय स्तम्भ स्तापना विधि के अवसर पर ता. १२-१२-२०२१

प.पू. लालजी महाराजश्री : आज से पर्व का प्रारम्भ हो चुका है । अभी जो समय बाकी है । उस में सभामंडप, रसोई, उतारा, यज्ञशाला इत्यादि तैयार होगा । गाँव-गाँव से तथा विदेश से हरिभक्त आये है । तथा संत लोगो की अधिक संख्या देख कर आनंद आ रहा है । नरनारायणदेव हमारे गौरव है । हम लोगो को प्रत्येक साँस नरनारायणदेव की वाणी है । श्री नरनारायणदेव को महाराज ने अपने हाथ से स्थापित किये है । तथा चबूतरे पर खडे होकर महाराजने नरनारायणदेव की महिमा कहे है । महाराज के वचन है कि मुझ में और श्री नरनारायणदेव में कोई अंतर नही समझना । जो महाराज के इसबात को नही मानता हो वह विमुख कहा जायेगा । कारण महाराज के आज्ञा-वचन का जो उल्लंधन करता है । उसे महाराज द्वारा की गई व्याख्या में सम्प्रदाय से विमुख कहते है । नरनारायणदेव की जितना महिमा करे उतना कम है । उस देव के २०० वर्ष पूरे हो रहे है । यह कोई छोटी बात नही है । यह बडा प्रसंग है । आगे बैठे यजमान तो इस प्रसंग का लाभ लिये ही है । केवल धन से ही नही स्वंय सेवकोने इस अवसर पर छोटी से छोटी सेवा तथा मैदान की स्वच्छता, रसोई की स्वच्छता सभी धन्यवाद के पात्र है । गुजराती में एक कहावत है कि टीपे-टीपे सरोवर भराय इस तरह से बडा प्रसंग पूर्ण हो जाता है । अभी हम सभी को उत्सव तक पूर्ण निष्ठा और श्रम से सबसे उत्तम कृत्य करना है । नरनारायणदेव के इस उत्सव को हम सब अपना मानकर आनंदपूर्वक मनाना है । आप सभी के परिवार में दिन प्रतिदिन सत्संग करने का बल बढे । तथा नरनारायणदेव देव पर निष्ठा बढे । आज के पवित्र अवसर पर नरनारायणदेव के चरणो में प्रार्थना है ।

प.पू. आचार्य महाराजश्री : महाराजश्री ने हम सभी को यह देव दिये है । देव के साथ जुडे रहे । महाराज ने शिक्षापत्री भी दिये है । और उस में लिखा है कि :

ये पालयन्ति मनुजाः सच्छास्त्रप्रतिपादितान् ।
सदाचारन् सदा तेऽत्र परत्र च महासुखाः ॥

महाराज के द्वारा कहे गये सदाचार का जो पालन करता है । वह इस लोक तथा परलोक में भी सुख प्राप्त करते है । इस भूमि पर रक्षण करने की जिम्मेदारी महाराज की है । लेकिन हम सभी की रक्षा हेतु जिम्मेदारी महाराज ने हमेशा ली है । महाराज की बातो का जो पालन करेगा । उसे महाराज सुखी रहेगे । महाराज की बात न मानने वाले जैसा करेगे वैसा मिलेगा । इसके लिये महाराजने कठोर शब्द कहे है । हमारा उने लेना देना नही है ।

उत्सव कई आते है । लेकिन ''पर्व'' अकेला है । हमे यह पता नही है कि हमारे जीवन में ऐसा महोत्सव कब आयेगा ? इस लिये हमारा एक निवेदन है कि पर्व देखे । आलस्य करके बैठ नही जाये । ऐसे भगवान है ।

आनंद प्राप्त करे ।इसे पर्व कहते है।लम्बा लिखे।इसका वजन नही पडता है। पर्व दो अक्षर का ही भारी है। इस लिये एक शब्द में लिखा है।महाराज हम लोगो के साथ है रहेगे। हमेशा रहे है। जब तक इस चबूतरे पर आते रहेगे। कठिन शब्द को सरल शब्द में कहे तो अडसठ तीरथ चरणे, कोटि गया काशी...... आरती के समय यह अंश हमेशा गते है।विचार करने योग्य है कि मुक्तानदं स्वामी ने प्रारम्भ में विरोध किये। कि कल के आये ये बच्चे को गुरु गद्दी पर बैठा दिये।और समाधि प्रकरण से सत्संग के नाम से शुरु करते है।लेकिन जब उन्हे समझ में आया।तो यही मुक्तानंद स्वामी ने महाराज की आरती उतारे थे। यह विषय बहुत कुछ समझाता है।बाद में संतो ने विश्लेषण भी लिखे है। जैसे शीदनो भटको छो मत पथमां रे लोल......

ऐसा बहुत कुछ लिखा गया है।हमे जो मिला है। वह कही भी नही प्राप्त होगा। यह पर्व महोत्सव हमारे जीवन में कभी नही आया है। मैं मानता हूँ पुनः आयेगा भी नही ! इस लिये मर्यादा पूर्वक अधिक आनंद के साथ पर्व को मनाये।भगवान मिले है तो हमें सुख मिलता ही है। दुःखी नही हो। गंभीर नही बने। रीलेक्स रहे। शरीर है तब तक भगवान का सुख प्राप्त करें।

आप सभी हरिभक्त भाईयो और बहनो सभीने तन, मन, धन से सेवा दिये है।इसके लिये आप सभी को धन्यवाद है।आप की सेवा हमारी बुक में नही भगवान के वही खाते में लिखी जा रही है।हमे भगवान को ही खुश करना है।भगवान के खुश रहने पर सब कुछ प्राप्त होता है। केवल लक्ष्मीजी की सेवा करने पर नारायण के साथ लक्ष्मीजी भी चली जाती है। हमे आप से बार-बार मिलना है। ये देव तथा परिवार किसी के पास नही है। इसका हमें गर्व रखना चाहिए।

शाकोत्सव का समय हो गया है। रोटी तो सभी को घर पर मिलती है। लेकिन इस प्रसाद का महत्व है। इस लिये इसे व्यर्थ नही करे। प्रेम से देव के प्रसाद को ग्रहण करें।

अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्री नरनारायणदेव आदि देवो की थाल-रसोई की सूची

थाल का विवरण	रसोई	
चुरमाकालड्डू	रु. १,८००/-	रु. १०,०००/-
मगशका लड्डू	रु. १,८००/-	रु. १०,०००/-
बूंदी के लड्डू	रु. १,८००/-	रु. १०,०००/-
मोतीचूर के लड्डू	रु. १,८००/-	रु. १०,०००/-
मोहनथाल	रु. १,८००/-	रु. १०,०००/-
मगशपूरी	रु. २,०००/-	
मालपूवा	रु. २,०००/-	रु. ११,०००/-
खीरपूरी	रु. २,३००/-	रु. १२,०००/-
अडदिया का थाल	रु. २,५००/-	रु. १२,०००/-
साटा का थाल	रु. २,५००/-	रु. ११,०००/-
शीखंड पुरी	रु. २,५००/-	रु. १७,०००/-
ड्रायफ्रुट हलवा	रु. २,५००/-	रु. १२,०००/-
बासुंदी पुरी	रु. २,७००/-	रु. १७,०००/-
खीर-मालपुवा	रु. २,७००/-	रु. १४,०००/-
गुलाब जामुन	रु. ३,३००/-	रु. १२,०००/-
मैसुब	रु. ३,५००/-	रु. १२,०००/-
काजू-बदाम मैसुब	रु. ४,०००/-	रु. १७,०००/-
सत्तरधाम का थाल	रु. २,५००/-	

स्थायी सुरक्षित थाल रु. ५,००१/- तथा रु. १०,०००/-

ठाकोरजी को शायं का थाल रु. ५००/-

Mo. : 8238001666

चौदहवाँ रत्न

- चंद्रकांत मोहनलाल पाठक

एकबार श्रीजी महाराज कच्छ क्षेत्र में मानकुंवा गये थे । वहाँ पर एक बढई (सुथार) के घर पर रहे थे । बढई के पास एक नाथ नाम का पुत्र था । नाथा की माँ भोजन बनाकर महाराज को खिलायी । भोजन करने के बाद नाता की माँ ने महाराज से बोली । मेरा बच्चा नाथा खराब गाली देता है । पडोशी भी इससे परेशान हो गये है । आप इसको लेजाकर सुधारे । मुझे ऐसा लडका नही चाहिए । ऐसे लडके का होना न होना सब एक समान है ।

श्रीजी महाराज नाथा से कहे तुम मेरे साथ आओ अच्छा लगेगा । नाथा महाराज के साथ चल दिया । श्रीजी महाराज माणकी के उपर बैठ गये । तभी नाथा ने कहा कि आप घोडे पर बैठ गये । और में पैदल चलू यह कैसे हो सकता है । श्रीजी महाराज माणकी के उपर से नीचे उतर गये । नाथा से बोले, हम दोनो लोग पैदल चलते है ।

चलते-चलते नाथा ने कहा कि मेरी माँ कहती है कि स्वामिनारायण भगवान है । आप का नाम स्वामिनारायण है । श्रीहरि बोले लोगो ने मेरा नाम स्वामिनारायण रखा है । नाथ ने पूछा आप भगवान है ? श्रीहरि बोले हम भगवान नही भगवान के भक्त है । नाथा ने कहा कि मुझे भी लगता है कि आप भगवान नही है । फिर भी हमारी माँ आप को भगवान मानती है । कई बार महाराज भी कहती है । महाराज अर्थात् क्या ? श्रीजी महाराज बोले हम ब्राह्मण है । ब्राह्मण को लोग महाराज कहते है ।

इस प्रकार बात करते करते बंगडी गाँव का गया । गाँव के किनारे तालाब के पास सती माँ का टीला था । यह देखकर श्रीहरि बोले । यहाँ कुछ समय के लिये आराम करते है । तुम माणकी की तालाब में पानी पिलाने ले जाओ । नाथा माणकी को लेकर तालाब की तरफ चल दिया । पानी में थोडा प्रवेश करने पर एक बड़ा गड्ढा आ गया । नाथा और माणकी दोनो डूबने लगे थे । नाथा आवाज लगाया । महाराज मैं डूब रहा हूँ । शीघ्र आये । शीघ्र आये । महााज यह देख कर बैठे-बैठे अपना हाथ लम्बा किये । यह दृश्य नाथा ने देखा ! तथा दोनो को बचा लिये । नाथा ने कहा महाराज आप थे । हमको बचा लिये ।

कुछ समय के बाद स्वस्थ होने पर नाथा ने महाराज से बोला, आप सुनिये एक कथा कहता हूँ । में रामचंद्र भगवान की कहानी सुना हूँ कि कथा में ऐसा है । कि एक बार रामचन्द्रजी भगवान हाथ में रोटी लेकर खा रहे ते। उसी समय एक ऋषि काग भूसुंडी हाथ में से रोटी लेकर उड गये । रामचन्द्रजी तत्काल अपने हाथ को लम्बा करके कौये के चोच से रोटी छुडा लिये थे । भगवान हो तो ही हाथ लम्बा कर सकते है । ऐसा हमने कथा में सुना है । तब मुझे ज्ञात हुआ कि मैं और आप की माणकी तालाब में डूब रहे थे । आप तुरंत हाथ लम्बा करके हम दोनो की रक्षा किये । मैं सत्य कहता हूँ कि भगवान ही हाथ को लम्बा भगवान है कि नही ? यदि सत्य नही कहेगे तो यह माणकी की चाबुक हमारे हाथ में है । इससे मार-मार कर हड्डी तोड दूँगा । श्रीजी महाराज बोले हे नाथा ! हमें मारना नही । हम ही भगवान है ।

नाथा ने कहा, मार के डर से अब कैसे आप स्वीकार कर लिये कि मैं ही भगवान हूँ । मार चौदहवा रत्न है । इसके बाद श्रीजी महाराज ने कहा है नाथा अब तुम अपने माँ के पास जाओ । माँ तुमको याद कर रही है । नाथा ने कहा महाराज मुझे उसके पास नही जाना है । वैसे भी मैं उसे कहा अच्छा लगता था । हमे तो अब आप की जीवन भर सेवा करके जीवन व्यतीत करना है ।

अहमदाबाद शहर के समीप श्री स्वामिनारायण भगवान के प्रसादी के गाँव

जमीयतपुरा

- अहमदाबाद कालुपुर मंदिर से बाय रोड ३७ मिनट ।
- अमहादाबाद एअरपोर्ट से २३ मिनट

संकलन : प्रफुल खरसाणी

जमीयतपुरा मंदिर :-

अहमदाबाद से कलोल जाते समय एस.टी.बस से जा सकते है । यह गाँव ता.जि. गांधीनगर में आता है । अत्यंत प्रसिद्ध अडालज की वाव इस गाँव के बगल में स्थिति है।

यहाँ पर हरि मंदिर है । मंदिर में सहजानंद स्वामी की पटमूर्ति स्थापित है । मंदिर दक्षिण बारणा वाला है । गाँव के पूरब हाईवे उपर प्रभा तलावडी और कुँवा तथा जिस रायण वृक्ष के नीचे श्रीहरि संत-हरिभक्तो सहित बिराजे थे । उस जगह पर वर्तमान में वृक्ष नही है । लेकिन वहाँ पर छत्री बनाकर श्रीहरि के चरणारविंद पडे है । ये सभी जगह प्रसादी के स्थल है । चरणारविंद के बगल में हनुमानजी स्थापित है । श्रीहरि महा प्रभु आदरज तथा ओला गाँव जाते समय इस गाँव में कईबार रुके थे । श्रीहरि इस गाँव में प्रभा तलावडी में स्नान करके रायण वृक्ष के नीचे सभा किये थे । यह प्रसंग श्री घनश्याम लीलामृत सागर के ३ तरंग ७६ में नीचे रुप से वर्णित है।

चाल्या आदरज थी धारी उर, वच्चे आव्युं छे, जमेतपुर ॥
ते गाम तणी सीम मोजार, प्रभा तलाब निरधार ॥५॥
तेमा स्नान कर्यु नरवीरे, संत सहित शाम शरीरे ॥
त्यां छे रायणनुं एरव वृक्ष, तेने नीचे बिराजया प्रत्येक्षा ॥६॥

इस तरह श्रीहरि महाप्रभु अपने संतो-पार्षदो तथा काठी घुडसवारो के साथ जमीयतपुरा में आये थे । अपने आश्रित जमीयतपुरा के भक्तो का मनोरथ पूर्ण करके ज्ञान दिये थे । धर्म के प्रति अक्षरधाम का वर्णन तथा भक्तो को श्रीहरिने सुख दिया था । इस प्रकार भगवान श्री स्वामिनारायण इस गाँव की भूमि को पुनीत किये थे । वर्तमान समय में इस गाँव में सत्संग अच्छा होता है । ''पर्व'' लगभग इसी क्षेत्र के पास मनाया जायेगा ।

श्री स्वामिनारायण म्युझियम

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से

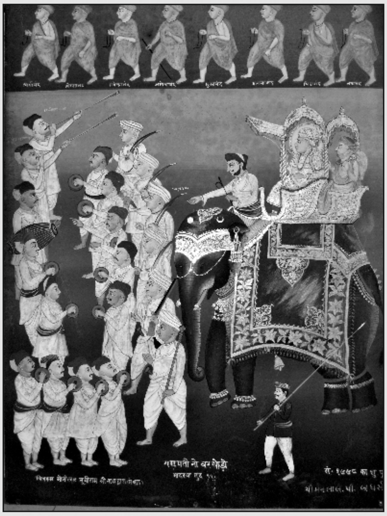

किसी भी समाज कि संस्कृति का ज्ञान उसकी कला–परम्परा से ज्ञात होती है । अपने सम्प्रदाय की चित्रकला शैली सबसे अलग है । उसमें से प्रेरणा लेकर चित्रकार अपना भाग्य बनाते है । उपरोक्त चित्र अहमदाबाद, कालुपुर मंदिर में श्री नरनारायणदेव के समक्ष कुलदोत्सव में रंग खेलने के बाद कांकरियाँ तालाब में स्नान करके संत–पार्षदो के साथ हाथी पर बैठकर पीछे आते हुए श्रीजी महाराज का है । अहमदाबाद मंदिर में रंगमहल में लगा वर्तमान श्री स्वामिनारायण म्युजियम में ऐसी ही चित्रकला होल नं. ८ में उपर के तल पर प्रदर्शित की गयी है।

– प्रफुल खरसाणी

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में पंजीकृत श्री महाविष्णुयाग यज्ञ की सूची - दिसम्बर-२०२१

दि. ०४-१२-२०२१	अ.नि. भारतीबेन अशोकभाई ठक्कर मेमनगर– ह. अर्चन तथा हिरत्न ।
दि. ०५-१२-२०२१	प.भ. जीनल जगदीशभाई पटेल – यु.एस.ए.
दि. ११-१२-२०२१	अ.नि.प.भ. मणीलाल लक्ष्मीदास भालजा साहब मंडल द्वारा जगदत किरीटकुमार वाघेला – मणीनगर – ह. किरीटभाई वाघेला
दि. २२-१२-२०२१	प.भ. मनोजकुमार सोमाभाई पटेल – चि. आनिष के विवाह हेतु – घाटलोडीया ।
दि. २६-१२-२०२१	सांख्ययोगी मरघाबा – हरिपर – ध्रांगध्रा – प्रे. सांख्ययोगी राजकुंवरबा तथा उषाबा – मोरबी ।
दि. ३१-१२-२०२१	प.भ. महेन्द्रभाई विठ्ठलभाई शिवरामभाई पटेल – रिद्रोलवाले – नारणपुरा ।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में भेट देनेवालों की नामावलि - दिसम्बर-२०२१

रु. १,००,०००/-	प.भ. सोनी चुनीलाल दुर्लभजी – राणीप – ह. जयेन्द्रकुमार सोनी, चि. जक्ष के जन्म दिन पर ।

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये – श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला ५/१०/२० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है ।

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. मोटा महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं ।

संप्रदायमां એક માત્ર વ્યવસ્થા શ્રી સ્વામિનારાયણ મ્યુઝિયમમાં મહાપૂજા / મહાભિષેક નોંધાવવા સંપર્ક કરો.

મ્યુઝિયમ મોબાઈલ:- ૯૮૭૯૫૪૯૫૯૭, પ.ભ. પરષોત્તમભાઈ - દાસભાઈ (બાપુનગર) : ૯૯૨૫૦૪૨૬૮૬

www.swaminarayanmuseum.org/com • email: swaminarayanmuseum@gmail.com

॥भक्तिसुधा॥

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के आशीर्वचन में से) एकादशी सत्संग सभा के अवसर पर (कालुपुर मंदिर हवेली) "आप को भगवान उनके घर में स्थान दे ऐसी पात्रता बनाये रखे"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

कभी विचार किये है कि ''सत्संग'' करने के लिये कितना प्रयास करना पडता है । और ''कुसंग'' स्वयं जीवन में आ जाता है । सत्संगी बने और बनाये ऐसा कहना पडता है । और यह व्यक्ति सत्संगी हो । उसकी पहचान निश्चित करने के लिये बहुत कुछ निर्धारण करना पडता है । कंठी, पूजा, तिलक, चादला, माला इसके बाद कही पर ज्ञात होता है कि सत्संगी है या नही ? ये बाह्य चिन्ह है । व्यक्ति अंर से सत्संगी है यह कैसे, जाना जा सकता है । जिस व्यक्ति के आपने पर प्रसंग ये मन बुद्धि बिगड जाये सत्संग का उसमें अभाव है । सत्संग सतर्क से आसीन हो जाते है । ये हो तो जान लेना कि हमारे अंदर कुसंग आ गया है । श्रद्धा कम हो जाती है । शंका संशय आ जाता है । सत्संग से क्या प्राप्त होगा ? तो यह सत्संग से दूर होने के लक्षण है । मन ऐसा सोले की हम नही करेगे तो क्या फर्क आयेगा । मेरे देने पर ही सब कुछ होगा । इस प्रकार बुद्धि बिगडने लगती है । ऐसा होने पर जागृत हो जाताना चाहिए । और ऐसे लोगो से सावधान हो जाना चाहिए । हमारा सत्संग उनमें जाना चाहिए । उनका कुसंग हमारे में नही आये । ये लोग अपने आस-पास के लोग ही होते है । अन्जान लोग आप से तर्क-वितर्क नही करेगे । लडका, लडकी, सास-ससुरा-बहु ये लोग घर के ही होते है । अडोस पडोस तथा नजदीक के सगे वाले होते है । ये लोग आपका अवगुण देखते है । पढे लिखे लोगो से यह भी होता है । यो लोग आप से लगाब कम कर देगे । तब हम लोग दुःखी हो जाते है । उद्वेग आ जाता है । अपना लगाव कम हो जाता है । तब यह विचार करना चाहिए कि ये सब भगवान कर रहे है । आप के सामने विपरीत संयोग पैदा करते है । यह हमे संसार से अनासक्त करने के लिये होता है । हमे इस संसार से अलिप्त रखने के लिये विपरीत परिस्थियाँ उत्पन्न करता है । जब ऐसी परीक्षा आये तो समझ लेना चाहिए कि अब महाराज की अपने उपर विशेष कृपा होने वाली है । भगवान आप को अपने घर बुलाना चाहते है । इस अधिक परीक्षण करते है । हम बाजार में जब कोई सामान खरीदने जाते है । तब जो वस्तु हमें प्रिय होती है । वही वस्तु उठाकर देखथे है । तथा कई बार निरीक्षण करते है । दुकान वाले से पूछते है कि इस वस्तु को घर ले जाना है । चार बार दिमाग में निर्णय करते है । ले या न ले ? इसके बाद ही खरीदते है । इसी प्रकार अपना जब अधिक परीक्षण होने लगे । हमारे महाराज उनके घर में हमारे लिये जगह बना रहे है । महाराज के घर में सबके लिये स्थान है । और लेने भी आते है । लेकिन जगह उसे मिलती है जो परीक्षण उत्तीर्ण करता है । विद्यालय में प्रश्नपत्र हल करना पडता है । इसके पश्चात पास फेल किया जाता है । इसी प्रकार जीवन की परीक्षा भी होती है । भगवानने जो सिखाया है उसका उपयोग, करके परीक्षा पास करना है । महाराज के विराट स्वरुप का दर्शन करना अपनी क्षमता से परे है । इस लिये महाराजने अपने सभी ऐश्वर्य, छिपाकर हम लोगो ती करह बनकर सिखा गये है । उनका कृपापात्र बनना अपना कर्तव्य है । हमे पूरा प्रयास करना चाहिए । महाराज अपने पास ही है । इसमें से जो निकल जाता है । श्रद्धा हट जाती है । भगवान के नियम का पालन नही

करता है। संसार के लालच में पड जाता है। इसमें मुख्य दो विषय है। प्रथम लालच और दूसरी कमजोरी लालच कैसी होती है। महाराज से अधिक दूसरे में अधिक सुख है। दूसरा है डर - यह कैसा। मान ले कोई लडकी ससुराल जाती है। पूजा साथ में लेकर गई हो। और ये लोग दूसरे भगवान को पूजा करते हो। तो उसे डर होगा। इन लोगो के कथनानुसार नही कार्य करेगे तो घर के सभी लोग नाराज हो जायेगे। कई लोग पूजा करने दैते है। कई लोग धर्म-नियम छुडा देते है। लेकिन आपकी यदि आन्तरिक निष्ठा सत्य होगी तो आप का अन्तरमन कोई नही ले सता है। नरनारायण की कृपा से दूसरे के मन में परिवर्तन आ जाता है। थोडी प्रतिक्षा करना पडता है। यदि आप पूजा न भी करे तो दूसरे भगवान नाराज नही होते है। इसके लिये घर में झगडा नही करना चाहिए। ऐसा करना भारी नही पडेगा। कई लोग कहते हैं कि खराब ग्रह चल रहे है। नवग्रह से अच्छा भगवान का अनुग्रह अच्छा है। जिस पर भगवान का अनुग्रह होता है। उसको कोई कुछ खराब नही कर सकता है। नरनारयण से अधिक कोई हमे सुख दे सकता है। ऐसी लालच नही करना चाहिए। हम दूसरे देव का न करे तो वह नारायण हो जायेगे। अपना अहित होगा। ऐसा भय नही रखना चाहिए। जिस प्रदेशका जो राजा होता है वहाँ पर उसका शासन चलता है। हम जिस भरतखंड क्षेत्र में रहते है। वहाँ के राजा नरनारायणदेव है। हम कोई भी वस्तु बिना उनके कृपा से नही प्राप्त कर सकते है। अपने प्रारब्ध में न हो तो भी नरनारायणदेव कृपा करे तो हमे मिल जायेगी। इस लिये सहारा एक होना चाहिए। किसी देवी-देवता का अपमान कभी नही करना चाहिए। महाराजने भी कहा है कि रास्ते में शिवालय आये तो दर्शन करना चाहिए। सभी देवता के पास देवत्व है। कुछ शक्तियाँ है। तभी तो देवता बने है। आदर सभी का करना चाहिए। आश्रय एक आराध्य देव का रखना चाहिए। आदर और आश्रय में अंतर है। जैस लौकिक जगत में एक ही पाते होता है। उसी अलौकिक संसार में एक आराध्य देव होते है। कभी भी अपने आराध्य देव को बदलना नही चाहिए। दूसरे का आश्रय नही रखना चाहिए। नरनारयणदेव अपना सब कुछ पूर्ण करते है। जिस प्रकार बिल्ली दाँत से अपने बच्चे को पकडकर ले जाती है। जरा सी भी चोट नही लगती है। तथा उसी दाँत से चुहे को मार देती है। भगवान किस करकमलो से असुरो का नाश करते है। तथा करकमलो से शरणागत की रक्षा करते है। शरणागत को रक्षा मिलती है। लेकिन शरणागत होना पडता है। कोई पानी में डूब रहा हो। हाथ पैर चलाये। और आवाज दे कि मुझे बचाये। तो कोई बचाता नही है। लोगो को लगेगा उसे ठंडे में अच्छा लगता है। इस लिये आराम से पानी में पडा है। सच्चे रुप से शरणागत होना चाहिए और पुकार लगाना पडता है। बिना बुलाये महाराज नही आते है। श्रद्धा रखना पडता है। अपने जीवन में कुसंग न आये। इस लिये लगातार जागृत रहना चाहिए। वह आप सभी करते भी है। नरनारायण देव आप सभी को इसकी लिये अधिकबल दे। ऐसी नरनारायणदेव के चरणो में प्रार्थना है।

श्री स्वामिनारायण मासिक के आजीवन सदस्यो के सौजन्य से

प.पू. आचार्य महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री और समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा नारणपुरा जेतलपुर मंदिर के महंत स.गु. शास्त्री स्वामी आत्मप्रकाशदासजी के प्रेरणा से माणसा के प.भ. डॉ. अतुलभाई मणीभाई पटेल (खांडवाले) परिवार ने अपने श्री स्वामिनारायण मासिक को २०० आजीवन सदस्य (रु।. २५०/- व्यक्तिगत) रु।. ५०,०००/- सौजन्य भेट दिये है। धन्य है। ऐसे भक्तो की इनके पिताश्री प.भ. मणीभाई जीवित रहे तब तक अपने स्वामिनारायण मासिक के प्रचार-प्रसार के प्रवृत्ति मे लगे रहे। - संपादकश्री

सत्संग समाचार

पर्व के प्रथम सोपान विजय स्तम्भ की स्थापना विधि

जिस पर्व की हम लोग आतुरता से राह देख रहे है। उस प्रव का प्रथम सौपान विजय स्तम्भ की स्थापना विधि ता. १२-१२-२१ के दिन वेदमंत्रो के गायन से महोत्सव के स्थल पर परमकृपालु श्री नरनारायणधेव के अमीदृष्टि से पूर्ण हुई।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तता प.पू. लालजी महाराजश्रीने हनुमानजी के प्रतीकवाले श्वेत विजय ध्वज को सर्वप्रथम अपने मंदिर में श्री नरनारायणदेव के चरणो में प्रसादी करके, पूजारी ब्रह्मचारी स्वामी उस ध्वज के साथ श्री नरनारायणदेव के चल स्वरुप को महोत्सव स्थल पर पूजन के लिये लाये । स्थल पर प.पू. महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री, पपू. लागीदवालाश्री तथा पू. श्री राजा उसी प्रकरा इस प्रसंग के यशस्वी यजमान परिवार द्वारा वेदोक्त विधि से पूरी पूजा पूर्ण की गई। इसके पश्चात श्री नरनारायणदेव के जयघोष के साथ विजय स्तम्भ की स्थापना की गयी।

प्रासंगित सभा में सर्व प्रथम श्री नरनारायणदेव की तथा धर्मकुल परिवार की पूजा-आरती इस अवसर के मुख्य यजमान प.भ. श्री विठ्ठलभाई शिवरामभाई पटेल समग्र महोत्सव के यजमान प.भ. श्री दशरथभाई प्रहलादभाई पटेल परिवार तथा अन्य उपस्थित सभी यजमान श्री और ट्रस्टी द्वारा की गई थी। महोत्सव के मुख्य यजमान स्वरुप में जो राशी निश्चित की गयी थी। वह रकम २ करोड ११ लाख धर्मकुल पूजन के यजमान रुप में एक अनामी धर्मकुल हरिभक्त प्रेमी थे। जिसे बताया गया था। पू. महंत स्वामीने सभा का संचालन सभी संतो के प्रतिनिधिरुप में शा. स्वामी पू. आत्मप्रकाशदासजी (नारणपुरा) तथा शा. स्वामी पू. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (गांधीनगर)ने सुंदर उद्बोधन किये थे। प.पू. लालजी महाराजश्री तथा प.पू. महाराजश्रीने सभी को आशीर्वाद दिये । अंत में विशाल संख्या में आदि संतभक्तोने शाकोत्सव का प्रसाद ग्रहण किये थे।(गोरधन वी. सीतापरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर एप्रोच (बापुनगर) द्वारा पर्व के उपलक्ष्य में सत्संग लक्षीय क्रिया - कलाप

प.पू. महाराजश्री के आज्ञा से तथा पू. लालजी महाराजश्री के प्रेरणा के साथ आशीर्वाद से और एप्रोच मंदिर के पू. महंत स्वामी के मार्गदर्शन से पूर्ण हुए क्रिया-कलाप।

(१) प्रत्येक एकादसी से कालुपुर मंदिर से पदयात्रा नियमित होती है। (२) ता. १५-११-२१ प्रबोधिनी एकादशी शाक भाजी का दिव्य हाट की दर्शन। (३) ५-१२-२१ रविवार को अहमदाबाद शहर में प्रसादी के स्थल की पदयात्रा के अर्न्तगत एप्रोच मंदिर में प्रेम दरवाजा-दामोदर पटेल का घर - कुबेर सिंह छडीदार का घर - दरियापुर दरवाजा दिल्ही दरवाजा हठीसिंह का डेरा - दरियाखान घुम्मट-नारणपुरा गाम हनुमानजी नाराणपुरा मंदिर श्री स्वामिनारायण म्युजियम दर्शन तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के दर्शन-आशीर्वाद । (४) ता. ७-१२-२१ श्री वचनामृत जयंती हेतु ग्रन्थ का वेदोक्त विधि से भावपूजन, पुष्पमहाभिषेक और आरती।(गोरधनभाई वी. सीतापरा)

पर्व महोत्सव के उपलक्ष् यमें सत्संग प्रवृत्ति

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाजाश्री की आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से कालुपुर श्री स्वामिनारायणंमदिर अक्षरभुवन के पूजारी सा. स्वामी कुंजविहारीदासजी और संत-पार्षद मंडल द्वारा अपने पर्व महोत्सव के उपल७य में की गई प्रवृत्तियाँ ता. २०-१२-२१ को ब्रह्माभोजन २०० परिवार खाडिया-अहमदाबाद (लक्ष्मीनारायणदेव मंदिर), दाजीपुरा (विहार गेरिता प्रदेश) मंदिर द्वारा जन मंगल पाठ, अखंड धुन, वृक्षा रोपण, समूह महापूजा आदि सत्संग लक्षीय और सामाजिक प्रवृत्तियाँ की गयी थी।

ता. २१-१२-२१ को २०० वृद्धो को जीवन संध्या वृद्धाश्रम में शिक्षापत्री माला, कंठी, और जीवन जरुरी वस्तुए ता. २५-१२-२१ को २०० अनाथो को - चोपडा, जीवन जरुरी सामान, २७-१२-२१ को गायो को घास चारा ता. २८-१२-२१ (कैन्सर वोर्ड में) २०० मरीजो को फल वितरण किया गया था। और नाना चिलोडा समूह महापूजा (मुकेश भगत)

“पर्व” महामहोत्सव के उफलक्ष्यमें श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर (से-२) द्वारा गाँवो में की गई सभाये

(१) २८-११-२१ मोटेरा गाँव में रात्रि सभा में शा. पी.पी. स्वामी, शा. राम स्वामी, धर्मस्वरुप स्वामी, दिव्यप्रकाश स्वामी और पा. महेन्द्र भगत आदि कथा वार्ता का लाभ दिये थे। (२) २९-११-२१ जामफलवाडी में ४ घंटे तक अखंड महामंत्र धुन, शाकोत्सव, प्रासंगिक सभा, शा. पी.पी. स्वामी, शा. राम स्वामी, धर्मस्वरुप स्वामी और देव स्वामी सत्संग सभा में धुन भजन, कीर्तन किये थे। (३) ३०-११-२१ न्यु राणीप में शा. पी.पी.

स्वामी, सत्संगभूषण स्वामी और नरनारयण स्वामी द्वारा सत्संग सभा हुई थी।(४)४-१२-२१ बदपुरा गाँव में शा. पी.पी. स्वामी, धर्मस्वरुप स्वामीने सत्संग सभा ें कथा-वार्ता-धुन-मभजन-कीर्तन किये थे।(५)५-१२-२१ धमासणा गाँव में शा. पी.पी. स्वामी, धर्मस्वरुप स्वामी, घनश्याम स्वामी और यहाँ पर सेवा दिये थे। जे.पी. स्वामी की विश्वविहारी स्वामी के उपस्थिति में हरिभक्तो द्वारा भव्य शातोस्व और सत्संग सभा हुई थी।(६)१०-१२-२१ वडु श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटोत्सव के अवसर पर ठाकुरजी का अभिषेक, अन्नकूट और सत्संग सभा शा. पी.पी. स्वामी, धर्मस्वरुप स्वामी की उपस्थिति में हुई थी।(७)१५-१२-२१ देलवाडा गाँव में शा. पी.पी. स्वामी, धर्मस्वरुप स्वामी की उपस्थिति में शाकोत्सव मनाया गया था।(८)१७-१२-२१ बदपुरा गाँव में शा. पी.पी. स्वामी और संत मंडल ने सुंदर सत्संग सभा करके भव्य शाकोत्सवकी महिमा समझाये थे।(९)१८-१२-२१ कुडासण (गांधीनगर) में शा. पी.पी. स्वामी और संत मंडलने सत्संग सभा में कथा का सुंदर लाभ दिये थे।(देव स्वामी - गांधीनगर मंदिर प पूजारीश्री)

श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर (से-२)

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा-आशीर्वाद से ''पर्व'' महामहोत्सव के उपलक्ष्य में सद्गुरु महंत स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से ईश्वरपुरा गाँव में श्री स्वामिनारायण महामंत्र २०० घंटे की धुन समाप्ति और दिव्य शाकोत्सव और सत्संजीवन के अन्तर्गत श्री नरनारायण गीता की कथा का रसपान सद्गुरु शास्त्री स्वामी रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर) ने किया था। और शाकोत्सव के दिन भावि आचार्य १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री आये थे। तथा शाक का वघार उनके कर कमलो द्वारा किया गया था। सभी भक्तो को आशीर्वाद देकर, खुश कर दिये। पूरे महामहोत्सव के यजमान अ.नि. श्री कांतिभाई जीवभाई चौधरी परिवारने लाभ उठाया था।(पूजारी स्वामी देवप्रकाशदासजी)

से-२० गांधीगनर मंदिर से २२ वे वार्षिक पाटोत्सव को धामधूम से मनाया गया था। इसके अर्न्तगत तीन दिन निष्कुलानंद काव्य के अर्न्तगत कल्याण निर्णय की कथा का रसपान शास्तरी स्वामी रामकृष्णदासजीने करवाया था। और ठाकुरजी का सम्प्रदाय के असार अभिषेक तथा अन्कोट पहनाया गया था। अन्नकूट बनाने की सेवा धर्मस्वरुप स्वामीने अति सुंदर रुप से किये थे। पाटोत्सव के दिन प.पू. भावि आचार्य श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री पधार कर शोभा बढाये थे। तथा सभी हरिभक्तो को आशीर्वाद दिये थे। (पूजारी स्वामी देवप्रकाशदासजी श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर से-२)

यहाँ के मंदिर में प्रत्येक एकादशी को धुन और महीने के प्रथम रविवार को धुन और सत्संग सभा का आयोजन स्वामी देवप्रकाशधासजी और श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा किया जाता है। इसी क्रम में तीसरी सत्संग सभा ता. ५-१२-२१ के दिन सम्पन्न हुई थी। उसमें कलोल मंदिर के महंत शास्त्री स्वामी यज्ञप्रकाशदासजी ने सत्संग कथा-वार्ता का लाभ दिये थे। साथ ही मथुरा महंत विश्वप्रकाशदासजी स्वामी भी पधारे थे।(तत्वम पटेल - उनावा)

जेतलपुर-नारणपुरा मंदिर के संतो द्वारा "पर्व" महोत्सव के निमित्त गाँवलो में सत्संग सभाये

आगामी श्री नरनारायणदेव के २०० वे व्रष 'पर्व' के उपलक्ष्य में प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा तथा जेतलपुर धाम के महंत स.गु. शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की शुभ प्रेरणा से कपडवंज विस्तार के गाँवो में सा. धर्मनंदनदासजी स्वामी घनश्यामजीवनदासजी स्वामी, जगतप्रकाशदासजी स्वामी धुमकर उत्सव की रुपरेखा समझाये तथा सभी को दिव्य अलौकिक लाभ लेने के लिये सलाह दिये। तथा कथा-वार्ता का सुंदर लाभ भी दिये थे।(१) २७ तथा २८-९-२१ कठलाल गाँव में सभा (२) २९ तथा ३०-९-२१ की वडुथल गाँव में सभा (३) १-१०-२१ कड्डूसर गाँव में सभा (४) २ और ३-१०-२१ नवा गाँव में सभा (५) ४ और ५-१०-२१ आत्रोली गाँव में सभा (६) ६-१०-२१ सिंगाली गाँव में सभा किये थे।(महंतश्री के.पी. स्वामी जेतलपुरधाम)

बालवाँ गाँव में श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के २०० वे पाटोत्सव 'पर्व' के उपलक्ष्य में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा 'पर्व' के अध्यक्ष प.पू. लालजी महाराजश्री तथा समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद जेतलपुर-नारणपुरा मंदिर के महंत स.गु. शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी के मार्गदर्शन से श्री नरनारायणदेव युवक मंडल बालवा द्वारा ता. १३-१२-२१ से १९-१२-२१ तक पवित्र धनुर्मास (खरमास) श्री मद् भागवत सप्ताह का पारायण का सुंदर प्रबन्ध किया गया था।

स.गु. शा. स्वामी अनुपमदासजी के वक्तापद से हुई थी। जिसके मुख्य यजमान प.भ. प्रहलादभाई चौधरी तथा दशरथभाई चौधरीने लाभ उठाये थे। कई हरिभक्त छोटी-बड़ी सेवा दिये थे। कथा पारायण के बीच प्रतिदिन धामोधाम से संत आकर दर्शन-आशीर्वाद दिये थे।(कोठारी धर्मनंद स्वामी - जेतलपुरधाम)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कोचरब (अहमदाबाद) का वार्षिक पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेवकी असीम कृपा से 'पर्व' उपलक्ष्य में प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा से तथा जेतलपुर मंदिर के महंत स.गु. शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर कोचरब अहमदाबाद का वार्षिक पाटोत्सव ता. २०-१२-२१ को सभी हरिभक्त मिलकर मनाये थे। पाटोत्सव के यजमान प.भ. बिरेनभाई जयंतीभाई पटेल ह. जीनाश पटेल (कोचरब) थे। भूदेवो द्वारा महापूजा और संतो द्वारा ठाकरुजी का अभिषेक, अन्नकूट आदि किया गया था। जेतलपुर, नारणपुरा केसंत आकर अमृतवाणी का लाभ दिये थे। (को. धर्मनंदनद स्वामी-जेतलपुरधाम)

गामडी गाँव में शाकोत्सव तथा २०० घंटे की धुन पूर्णाहुति तथा पदयात्रा

जेतलपुरधाम श्री रेवती बलदेवजी हरिकृष्ण महाराज की छत्रछाया में आये श्री स्वामिनारायण मंदिर गामडी गाँव में भगवान श्री स्वामिनारायण ने अपने संज्ञान में स्थापि किये थे। श्री नरनारयणदेव की प्रतिष्ठा २०० वर्ष पूर्ण होने जा रहा है। तब प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा प.पू. १०८ भावि आचार्य श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के पवित्र उपस्थिति में तथा जेतलपुर मंदिर के महंत स.गु. शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी के मार्गदर्शन से 'पर्व' के उपलक्ष्य में ५-१२-२१ के दिन पूरे गाँव के हरिभक्त अति उत्साह के साथ भव्य शाकोत्सव मनाया गया है।

इस अवसर पर प.पू. लालजी महाराजश्री आकर आशीर्वाद दिये थे। तथा अहमदाबाद जेतलपुर, कांकरिया, नारणपुरा से संत आकर कथा वार्ता का लाभ दिये थे। इस अवसर पर अ.नि. छोटाभाई शिवाभाई पटेल, रश्मिभाई छोटाभाई पटेल, ह. लव रश्मिभाई पटेल यजमान बनकर लाभ लिये थे। इसके बाद ता. १२-१२-२१ के दिन गामडी गाँव की बहनो ने २०० घंटे धुन पूर्ण किये थे। तथा सन्मान करके सत्संग सभा का आयोजन किया गया था।

ता. २६-१२-२१ के दिन गामडी गाँव से कांकरिया होकर अहमदाबाद कालुपुर मंदिर तक सभी सत्संगी भाई-बहन पैदल आये थे। जिस में जेतलपुर मंदिर के महंत स्वामी तथा कांकरिया मंदिर के महंत स्वामी स.गु. ब्र. वासुदेवानंदजी आदि संत जुडे थे। (को.धर्मनंदनदासजी - जेतलपुरधाम)

"पर्व" के उपलक्ष्य में ट्रेन्ट सीतापुर देश के गाँवो की श्री नरनारायणदेव के दर्शनहेतु पदयात्रा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आज्ञा तथा जेतलपुर-नारणपुरा मंदिर के महंत स.गु. शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी के मार्गदर्शन से अपने पर्व महामहोत्सव के उपलक्ष्य में ट्रेन्ट सीतापुर, कालीयाणा, धाकडी, डोडियासण, डूमाणा, मालनपुर, विरमगाम, मांडल, नाना उभडा, मोटा उभडा, नवरंगपुरा, जरवल्ला, पाटडी, शेर, कमणवा, आदि गाँवो के ३२५ भाई-बहन हरिभक्त और जेतलपुर-नारणपुरा मंदिर के संत मंडल के साथ २३-१२-२१ को विरमगाम से चलकर ता. २५-१२-२१ के दिन कालुपुर मंदिर श्री नरनारायणदेव का दर्शन करके पद यात्रापूर्ण किये थे। (शा. धर्मनंदनदासजी स्वामी - जेतलपुर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर हिंमतनगर द्वारा पर्व के उपलक्ष्य में प्रवृत्तियाँ और पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से अपने 'पर्व' महामहोत्सव के उपलक्ष्य में हिंमतनगर श्री स्वामिनारायण मंदिर द्वारा किये गये। अनेक प्रवृत्तियों ता. २३-९-२१, अखंड धुन श्री नरनारायण अष्टक की समूह पाठ, जनमंगल पाठ, ता. ३-११-२१ को मारुतियज्ञ ता. १५-११-२१ प्रबोधिनी एकादशी का उद्घाटन, हिंमतनगर तथा अगल-बगल के गाँवो में महामंत्र धुन का आयोजन यहाँ के मंदिर के प्रत्येक मंगलवार को होती है। जिस में सभी को पर्व के उपलक्ष्य में नियम धारण किये थे।

भरतखंड के राजा श्री नरनारायणदेव जिन्होने सर्व प्रथम श्री स्वामिनारायण भगवान अपने हाथ से स्थापित किये थे। जिस के २०० वर्ष के होने पर ''पर्व'' के उपलक्ष्य में प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आर्शीवाद से तथा 'पर्व' के अध्यक्ष प.पू. १०८ भावी आचार्यश्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री तथा समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर हिंमतनगर श्री घनश्याम महाराज का ३२ वे वार्षिक पाटोत्सव ता. १२-१२-२१ रविवार को उल्लास पूर्वक से मनाया गया था।

इस पाटोत्सव के अवसर पर ता. ९-१२-२१ से ता. ११-१२-२१ तक वैराग्यमूर्ति स.गु. श्री निष्कुलानंद स्वामी रचित ''वचन विधि'' ग्रंथ की कथा पारायण का आयौजन किया गया है। जिस के वक्ता पद पर शा. धर्मनंदनदासजी स्वामी (जेतलपुर) बिराजकर सुंदर कर्था वार्ता का लाभ दिये थे। यजमान के पद पर

प.भ. अमृतभाई सांकाभाई पटेल परिवार (सांचोदरवाले)ने लाभ लिये थे।

ता. १२-१२-२१ के दिन प्रातः महापूजा अभिषेक आरती, अन्नकूट, सत्संग सभा तथा भोजन प्रसाद आदि कार्यक्रम हुआ था।इस कथा के अवसर पर जेतलपुर धाम के महंत स.गु. शा. स्वामी आत्मप्रकासदासजी, स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी, कांकरिया मंदिर के महंत स.गु. ब्र. स्वामी वासुदेवानंदजी, वाली मंदिर से कोठारी, स.गु. स्वामी हरिप्रकासददासजी तथा अहमदाबाद, बावला, टोरडा, वडनगर, भात आदि धाम के संत आकर दर्शन आर्शीवचन दिये थे।(महंत स्वामी प्रेमप्रकाशदासजी - हिंमतनगर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर मरतोली पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा सम्प्रदाय के मूर्ध्न्य विद्वान कथाकार संत पू. सगु. शास्त्री स्वामी हरिकेशवदासजी की प्रेरणा से स्वामिनारायण मंदिर मरतोली के ३० वें पाटोत्सव ता. १-१२-२१ के दिन संत-हरिभक्त की उपस्थिति में उल्लास पूर्वक मनाया गया थआ। इसके यजमान श्री राकेशकुमार सोमाभाई पटेल परिवार के लोग थे।इस अवसर पर महापूजा और ठाकुरजी का अन्नकूट, प्रासंगिक सभा आदि पूर्ण किया गया था।इस अवसर पर धोलका मंदिर से महंत स्वामी सत्यसंकल्पदासजी, स्वा. रामप्रकाशधासजी और एप्रोच मंदिर के महंत स.गु. शा. स्वामी वासुदेवचरणदासजी आये थे। और सभी को कथा-वार्ता का लाभ दिये थे। (समस्त सत्संग समाज द्वारा कोठारी मणीभाई - मरतोली)

श्री स्वामिनारायण मंदिर धमासणा का चतुर्थ वर्षीय पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से तथा स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (गांधीनगर) के मार्गदर्शन से और स.गु. स्वामी जयप्रकाशदासजी और धमासणा गाँव के समस्त लोगो के सुंदर आयोजन से स.गु. स्वामी विष्णुप्रसाददासजी द्वारा सत्संग का पोषण प्राप्त श्री स्वामिनारायण मंदिर धमासणा का चौथा पाटोत्सव ५-१२-२१ के दिन विधिवत रुप से मनाया गया। इस अवसर पर १-१२-२१ से ता. ५-१२-२१ तक स.गु. शा. स्वामी विश्वविहारीदासजी के वक्ता पद से धीरज आख्यान की पंचान्ह पारायण किया गया था। कथा के मध्य संहिता पाठ के वक्ता पद पर स.गु. स्वा. भानुप्रकाशदासजी विराजमान थे। धर्मदा महिमा की कथा स.गु. शा. स्वा. रामकृष्णदासजीने सुंदर रुप से समझाया था। पूरे सभा का संचालन शा. स्वा. गोपालजीवनदासजी और महंत शा. दिव्यप्रकाशदासजी सुनाये थे। बहनो को दर्शन आशीर्वाद देने के लिये प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री आये थे। इस अवसर पर प्रत्येक भाविक भक्त यजमान बनकर लाभ लिये थे। श्री नरनारायणदेव युवक मंडलके प्रेरणात्मक सेवा प्रदान किये थे। (कोठारीश्री धमासणा)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

खेराली गाँव में “पर्व” के उपलक्ष्य में कथा पारायण

मूलीधाम निवासी श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से अपने ''पर्व'' महामहोत्सव के उपलक्ष्य में श्री स्वामिनारायण मंदिर खेराली में मूली मंदिर के वयोवृध्ध ज्ञानवृध्ध स.गु. स्वामी प्रेमजीवनदासजी और उनके संत मंडल की प्रेरणा से ता. ६-१०-२१ के बीच श्रीमद् भागवत पंचान्ह पारायण स.गु. स्वामी सत्संगसागरदासजी के वक्ता पद से हुआ था। गाँव के समस्त भक्तोने कथा का लाभ उठाया था। समस्त प्रसंग का सभा संचालन स्वामी नित्यप्रकाशदासजीने किया था। इस अवसर पर मूली, सुरेन्द्रनगर आदि धाम से संत आये थे। समस्त आयोजन स.गु. स्वामी कृष्णवल्लभदासजी के मार्गदर्शन से श्री नरनारायणदेव युवक मंडलने किया था। (शैलेन्द्रसिंह झाला)

प्रसादीभूत मेमका गाँव में कथा पारायण

मूलीधाम निवासी श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा मूलीधाम के वयोवृध्ध ज्ञानवृध्ध स.गु. स्वामी प्रेमजीवनदासजी तथा उनके संत मंडल की प्रेरणा प्रसादी वाले मेमका गाँव में ता. १६-११-२१ से २०-११-२१ तक श्रीमद् सत्संगिजीवन कथा पारायण स.गु. स्वामी सत्संगसागरदासजी के वक्ता हुई थी। जिसका लाभ हजारो हरिभक्तोने लिया था।इस अवसर पर मूली, सुरेन्द्रनगर आदि धाम से संत आये थे। समस्त सभा का संचालन स्वामी नित्यप्रकाशदासजीने किया था।इस अवसर पर मूली, सुरेन्द्रनगर आदि धाम से संत आये थे। समस्त आयोजन स.गु. स्वामी कृष्णवल्लभदासजी के मार्गदर्शन से श्री नरनारायणदेव युवक मंडलने किया था।(शैलेन्द्रसिंह झाला)

श्री स्वामिनारायणमंदिर सुरेन्द्रनगर १६ वाँ पाटोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु. स्वामी प्रेमजीवनदासजी तता स.गु.

स्वामी उत्तमप्रियदासजी की प्रेरणा से यहाँ के मंदिर के महंत शा. स्वा. ब्रह्मविहारीदासजी के मार्गदर्शन से सुरेन्द्रनगर मंदिर में बिराजमान देव का १६ वाँ वार्षिक पाटोत्सव तथा बहनो के मंदिर का दूसरा पाटोत्सव विधिवत रुप से मनाया गया था । पाटोत्सव के उपलक्ष्य में ता. १५-११-२१ तक श्रीमद् सत्संगिजीवन सप्ताह पारायण स.. स्वा. सत्संगसागरदासजी तथा त्यागवल्लभदासजी के वक्ता पद से हुई । पाटोत्सव एवम् पारायण के मुख्य यजमान प.भ. कानजीभाई छगनभाई गढिया (मेथाणवाले) परिवार के लोग थे । इस अवसर पर श्रीहरियज्ञ, ठाकुरजी का महाभिषेक अन्नकूट, तुलसी विवाह रात्रिय शास्त्रीय कार्यक्रम सुंदर रुप से मनाया गया था । धामो से संत और सांख्ययोगीबाई आई थी । सभा का संचालन कोठारी स्वा. राधारमणदासजीने सम्भाला था । अन्य सेवा में महंत शा. स्वा. सत्प्रकाशदासजी (अंजली), धर्मप्रकाश स्वामी, मुक्तजीवन स्वामी आदि संत थे । श्री नरनारायणदेव युवक मंडल और महिला मंडल में प्रेरणादायक सेवा दिये थे । (शैलेन्द्रसिंह झाला)

प्रसादीभूत मेथाण गाँव में कथा पारायण

मूलीधाम निवासी श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा वयोवृध्ध स.गु. स्वामी प्रेमजीवनदाजी तथा उनेक संत मंडल की प्रेरणा से अपने पर्व महामहोत्सव के उपलक्ष्य में श्रीहरि प्रसादी भूत मेथाण गाँव में ता. २३-११-२१ से ता. २१-११-२१ तक श्रीमद् सत्संगिजीवन पंचान्ह पारायण स.गु. स्वा. सत्संगसागरदासजी के वक्ता पद से हुई थी । यहाँ स्वामिनारायण मंदिर के २० वे पाटोत्सव को विधिवत रुप से मनाया गया था । सभी का संचालन स्वामी नित्यप्रकाधासजीने किया था । इस अवसर धाम से आये संत अमृतवाणी का लाभ दिये थे । सम्पूर्ण आयोजन स.गु. स्वा. कृष्णवल्लभदासजी के मार्गदर्शन में मेथाण सत्संग समाज द्वारा किया गाय था ।(शैलेन्द्रसिंह झाला)

घनश्यामनगर (ता. हलवद) गाँव की कथा पारायण

मूलीधाम निवासी श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा मूलीधाम के वयोवृध्ध स्वामी प्रेमजीवनदासजी तथा उनके शिष्य मंडल की प्रेरणा से हलवद तालुका के घनश्यामनगर गाँव में अपने 'पर्व' महामहोत्सव के उपलक्ष्य में ता. १-१२-२१ से ५-१२-२१ तक श्रीमद् सत्संगिभूषण महाग्रंथ की पंचान्ह पारायण स.गु. स्वामी सत्संगसागरदासजी के वक्ता पद से हुई थी । सभा का संचालन स्वामी नित्यप्रकाशदासजीने किया था ।

सम्पूर्ण आयोजन स.गु. स्वा. कृष्णवल्लभदासजी के मार्गदर्शन में गाँव के सभी हरिभक्तने किया था । (श्री नरनारायणदेव युवक मंडल - शैलेन्द्रसिंह झाला)

भराडा (ता. धांगध्रा) श्री स्वामिनारायण मंदिर की शिलान्यास

मूली धाम में बिराजमान राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से भराडा गाँव की बहनो का नूतन श्री स्वामिनारायणंदिर का शिलान्यास ता. १२-१२-२१ रविवार के दिन प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाश्री के शुभ सानिध्य में पूज्य श्री राजाके करकमलो से विधिवत पू र्ण किया था । इस अवसर धामो से सांख्ययोगी बहने आई थी । यहाँ पर जिसके घर में मंदिर है वे बसंतबेन और सभी बहनोने प.पू. गादीवालाश्री का आशीर्वाद लिये । इस अवसर पर धांगध्रा मंदिर की सांख्ययोगी कंचनबा आदी बहनोने तथा यहाँ के कोठारी भीखाभाई, चमनभाई, प्रवीणभाई, नटवरभाई, आदि भक्तोने प्रेरक सेवा दिये थए । मूली के महंत स.गु. स्वामी हरिप्रकाशदासजी की प्रेरणा से सभी हरिभक्तोने सुंदर सेवा दिये थे । यहाँ पर अलौकिक शाकोत्सव मनाया गया था ।(अनिलभाई - धांगध्रा)

विदेश सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर शिकागो

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के आज्ञा से तथा प.पू. लालजी महाराजश्री एवम् समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से शिकागो मंदिर के महंत शा. स्वा. भक्तिनंदनदासजी तथा ब्रह्मचारी पूजारी स्वा. कृष्णप्रियानंदजी के सुंदर मार्गदर्शन में यहाँ पर अपने सभी उत्सव उल्लास पूर्वक मनाया जाता है ।

प.पू. आचार्य महाराजश्री के ४९ वे प्रागट्योत्सव, काली चौदश, श्री हनुमानजी की पूजा-अर्चना, अन्नकूटोत्सव, तुलसी विवाह, सुंदरकांड का पंच दिनात्मक कथा महंत स्वामी के वक्तापद से हुई । जिसके यजमान श्री कमलेशभाई शाह, श्री विनीत मेहता वर्षाबेन गदाणी थे । प्रमुखश्री जगदीशभाई पटेल आभार विधि करके सभी को कृतज्ञता व्यक्त किये । प्रत्येक उत्सव में छोटी-बडी सेवा के यजमान बनकर हरिभक्तोने लाभ लिया । तुलसी विवाह में भी वरपक्ष, कन्यापक्ष और मामा पक्ष यजमान हरिभक्तोने लाभ लिया । महंत स्वामी और ब्र. के.पी. स्वामी के प्रेरणा से युवक मंडल, किचन कमेटी आदिने प्रेरक सेवा दी । (वंसत त्रिवेदी - शिकागो)

अहमदाबाद मंदिर में श्री ठाकुरजी का थाल तथा संतवर्णी पार्षदो की रसोई देने वालो की सूची

कारतक सुद-१/२ प.भ. वत्सल तथा जीषा तथा आष्ठा (डांगरवा), प.भ. किरीट त्रिभोवनदास (न्यु राणीप), प.भ. कुंवरजीभाई हरजीभाई परमार (जामसर), प.भ. सोनी कृष्णकांत कांतिलाल (साणंद), अ.नि. पानाचंद भुराभाई शाह (अमदावाद). **कारतक सुद-३** वाळंद जसवंतभाई अंबालाल (अमदावाद), प.भ. पेथाणी कीर्तन नलीनभाई, प.भ. चंद्रिकाबेन नरेशभाई महेता (अमदावाद), प.भ. जीतुभाई क्याडा (अमदावाद). **कारतक सुद-४** प.भ. रवजी मूळजी पटेल (बळदीया-कच्छ) **कारतक सुद-५** प.भ. चौधरी अक्षर तथा जाह्नवी तथा समरी कौशिककुमार (शिकागो), प.भ. दर्शन दिनेशभाई ठाकर (धनबाद), प.भ. शंकरभाई भाईलालभाई (सरेज), प.भ. हर्ष पियुषभाई पटेल (अमदावाद), प.भ. सहज, हरि, निल (अमदावाद). **कारतक सुद-६/७** अ.नि. जयंतीभाई सी. झवेरी (अमदावाद), अ.नि. सुरेशभाई गोविंदभाई पटेल (अमदावाद), अ.नि. प्रेमजी रूडा डबासीया (माधापर-कच्छ). **कारतक सुद-८** प.भ. प्रेमजी शिवजी भंडेरी (कच्छ), प.भ. वालजी नारण मूळजी (सुखपर-कच्छ), "क हरिभक्त, प.भ. पटेल अशोकभाई भोळीदासभाई (वडु). **कारतक सुद-९** प.भ. लक्ष्मण शिवजी हिराणी (सुपर-कच्छ), प.भ. रमेशभाई मोरडीया (निंगाळा). **कारतक सुद-१०** प.भ. मितुलभाई घनश्यामभाई पटेल (अमदावाद), प.भ. प्रविणभाई रणछोडभाई चावडा (बेंग्लोर), अ.नि. अरविंदभाई हिराभाई पटेल (भरूच), अ.नि. कांताबेन नारणभाई पोकार (दयापर-कच्छ). **कारतक सुद-११** प.भ. ईन्द्रवदन रतीभाई मगनभाई पटेल (देवपरा), अ.नि. चौधरी अनरबेन सांकाभाई (माणेकपुर), प.भ. ढबेलभाई कुबेरलाल मोदी (वडनगर), प.भ. लक्ष्मणभाई पोपटभाई वागडीया (निकोल), प.भ. सीमाबेन निरजभाई रास (भुज-कच्छ), प.भ. भरतभाई रतिलाल शाह (अमेरिका). **कारतक सुद-१२** अ.नि. आशिष भीभाई भावसार, हरिॐ परिवार (सरसपुर), अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई पटेल (गांधीनगर), प.भ. पटेल जगदीशभाई चिमनभाई (गांधीनगर), प.भ. पटेल कियान, धर्म, बिन्देश (गांधीनगर), प.भ. नंदुभाई डाह्याभाई (झुंडाल), प.भ. सुशीलाबेन तथा ईलाबेन किल्पाबेन (अमदावाद), प.भ. राजेशभाई नारणदास पटेल (अमदावाद), अ.नि. मंजुलाबेन हरजी केराई (भारापर-कच्छ), प.भ. कांतिभाई वेलजी भंडेरी (रामपर-कच्छ). **कारतक सुद-१२** गं.स्व. शांताबा विराभाई भीकडीया (सुरत), प.भ. श्रेया हर्ष पटेल (अमदावाद), प.भ. संजयभाई पुनावाळा (मुंबई), प.भ. जयंतीभाई नारणभाई पटेल (अमदावाद), लीलाबेन छोटाभाई पटेल (बोपल), अ.नि. भरतभाई लालभाई पटेल (अमदावाद), अ.नि. सां. झवरबा (वावोल), प.भ. भुडीया केसराभाई करशनभाई (फोटडी-कच्छ), अ.नि. ईजुबेन मावजीभाई चौधरी, प.भ. क्रिनाबेन घनश्यामभाई रेवाभाई पटेल (अमदावाद). **कारतक सुद-१३** प.भ. गोविंदभीमजी पिंडोरीया (नारणपर-कच्छ), प.भ. रामजी वाघजी वरसाणी (सुपर-कच्छ), अ.नि. महादेवभाई रामदासभाई पटेल (बामणवा). **कारतक सुद-१४** प.भ. ठक्कर जयंतीलाल कानजीभाई (बावळा), प.भ. पटेल कमळाबेन लालभाई (वावोल), अ.नि. रामजीभाई कल्याणभाई (खोपाला). **कारतक सुद-१५** प.भ. साकरबेन केशवलाल पटेल (उनावा), अ.नि. आशिष भीखाभाई भावसार (सरसपुर), स.गु. श्रीजी स्वामी (निकोल मंदिर), अ.नि. मेघबाई कानजी वरसाणी (मानकुवा-कच्छ).

कारतक वद-१ प.भ. मानसीबेन तथा दर्शनभाईना लग्न प्रसंगे. **कारतक वद-२** अ.नि. अंबाबेन भोगीलाल (राजपुर), प.भ. केतनभाई किशोरभाई आचार्य (अमदावाद), प.भ. विनय व्रजेश भावसार (अमदावाद), प.भ. चंद्रकांत धिरजलाल महेतालीया (मुंबई), अ.नि. स.गु. स्वामी नारायणप्रसाददासजी ("स.जी.वी.पी.), प.भ. मायाबेन दिपकभाई महेता (अमदावाद). **कारतक वद-३** अ.नि. देविकाबेन बटुकराय दवे (अमदावाद). **कारतक वद-४** प.भ. जसुबेन नारणभाई कानजी राघवाणी (बळदीया-कच्छ), प.भ. अश्विनभाई नटवरभाई पटेल (ईटादरा). **कारतक वद-५** पू. बिन्दुराजा (पू. निहारीकाकुंवरबा द्विवेदी) (अमदावाद), अ.नि. घनश्यामभाई रामदास पटेल (वासणा), प.भ. मूळजीभाई आणंदभाई मकवाणा. **कारतक वद-६** पटेल लालजीभाई मगनदास (सईज), प.भ. ईश्वरभाई कुंवरजीभाई धनजीभाई जादवाणी (सुरत). **कारतक वद-७** प.भ. महेन्द्रभाई शाह (अमदावाद), प.भ. राकेशभाई अंबालाल पटेल (अमदावाद). **कारतक वद-८** प.भ. आतिश मनोजकुमार पटेल (अमदावाद), प.भ. निशाबेन मनोजभाई रैयाणी (अमदावाद), **कारतक वद-९** प.भ. गोरधनभाई वालजीभाई सीतापरा (अमदावाद), प.भ. रमणीकलाल डी. पटेल (महेसाणा), प.भ. प्रविणभाई डी. पटेल (महेसाणा), अ.नि. रामजीभाई धनजीभाई टुंडीया (अमदावाद), प.भ. अरविंदभाई नारणदास (अमदावाद), प.भ. मयुरभाई जसवंतलाल भावसार (अमदावाद), प.भ. भरतभाई कांतिलाल परमार (अमदावाद), प.भ. घनश्यामभाई शंभुभाई पटेल (बापुनगर), प.भ. लक्ष्मणभाई बळदेवभई विहारीया (अमदावाद). **कारतक वद-१०** अ.नि. चंद्रकांतभई केशवलाल महेता (अमदावाद), प.भ. पटेल मनीषाबेन केतनभाई (न्यु राणीप), प.भ. अमिबेन मुकेशभाई (आणंद), अ.नि. भारतीबेन रवजीभाई पटेल (अमदावाद), प.भ. जान्वी, प्रियानी, हिनानी जयेशभाई पटेल (अमदावाद), प.भ. पूर्णिमाबेन कनुभाई पटेल (अमदावाद), प.भ. रूखीबेन गिरधरलाल पटेल (सलाल). **कारतक वद-११** प.भ. मीस्त्री जगदीशभाई जसुभाई (कणभा), गोपीनाथजी महाराज मंडल (सरसपुर). **कारतक वद-१२** प.भ. कनुभाई करशनदास पटेल (ईटादरा), प.भ. मनजी शिवजी हिराणी (नारायणपर-कच्छ), प.भ. चौधरी राजुभाई वेलजीभाई (बालवा), प.भ. बाबुभाई वनमाळीदास पटेल (अमदावाद), प.भ. कमळशीभाई रवजीभई पानसुरीया (गांधीनगर), अ.नि. मंजुलाबेन जगदीशभाई पटेल (गांधीनगर), प.भ. धर्म, बिंदेश पटेल तथा कियान बिन्देश पटेल (गांधीनगर). **कारतक वद-१३** अ.नि. रमेश भगत गुरु स.गु. स्वामी ज्ञानजीवनदासजी (कुंडळ), अ.नि. प्रेमजीभाई मेघजीभाई ताणी सुखपर-कच्छ). **कारतक वद-१४** अ.नि. घनश्यामभाई गणेशभाई भुवा (हरिपर), प.भ. लीलानंद भावसार (पोरबंदर). **कारतक वद-३०** श्री लक्ष्मीनारायण युवक मंडळ (अमदावाद), अ.नि. मणीबेन नानजीभाई गोगाणी (चिखली)

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।

बाली (राजस्थान) में शाकोत्सव करते प.पू. लालजी महाराजश्री ।

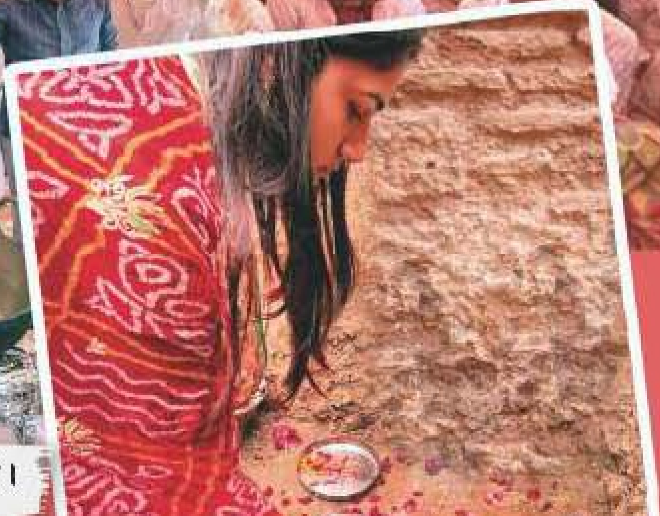

भरावा (झालावाड) कस्बे के मंदिर का खात मुहूर्त करते प.पू. श्री राजाश्री

गांधीनगर सेक्टर-२ में पाटोत्सव के अवसर पर आशीर्वाद देते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री ।

डांगरवा में पर्व के निमित्ते समूह धुन तथा शाकोत्सव के अवसर पर प.पू. लालजी महाराजश्री की आरती उतारते हुए हरिभक्त गण

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at
Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/2021-2023
Issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2023

पर्व के उपलक्ष्य में विहार में प्रभात फेरी।

पर्व के उपलक्ष्य में विरमगाम से कालुपुर तक पदयात्रा।

पर्व के उपलक्ष्य में बापुनगर मे शाकोत्सव की सभा में प.पू. लालजी महाराजश्री तथा विशाल संख्या में हरिभक्त।

छेर गाँव में २०० बाय २०० फूट के खेत में
गेहूँ की फसल से बनाया गया पर्व का लोगो।

केंटकी (अमेरिका) में आये टोरनेडो से प्रभावित को
अपने आई.एस.एस.ओ. द्वारा सहायता पहुँचायी गई।

श्री स्वामिनारायण सम्प्रदाय के देश-विदेश के हरिभक्तो के आग्रह पर उनकी सुविधा के लिये आनलाईन
डोनेशन कालुपुर मंदिर की आफिसियल वेबसाइट पर नीचे दिये लिंक द्वारा कर सकते है। http://www.swaminarayan.in/donation

Prafull Kharsani